बाईबिल परिचय पुस्तकमाला 03

पवित्रात्मा-प्रेरित

शास्त्री जे सी फिलिप

कार्यवाही सम्पादक डा. सनीश चेरियान

बाइबल परिचय 03

शास्त्री जे सी फिलिप

कार्यवाही संपादक:
शास्त्री सनीश चेरियान

प्रतिलिपि अधिकार: 2022

आनंद भवन प्रकाशन

http://www.OnlyFreeBooks.com

Mob: 999 519 8690

बाइबल परिचय 03

बाइबल परिचयमाला की शुरू की दो पुस्तिकाओं में हमने पुराने नियम और नए नियम के बारे में विस्तार से परिचय दिया था। इसके साथ साथ □ ब एक बा□ और जानना जरूरी ह□ वह यह ह□कि यह महान ग्रंथ क□से लिखा गया।

आज दुनिया में बहु□ सारे महान ग्रंथ हैं। लेकिन याद रखें कि पवित्र बाइबल इन ग्रंथों से बिल्कुल □ लग ह□ □ो यह किस □रह से □ लग ह□ □ न्य ग्रंथों और इसमें क्या □ं□र ह□इसको समझना जरूरी ह□इसके बारे में प्रभु का वचन बहु□ कुछ कह□ा ह□जिसको हम इस पुस्तक में सारांश में देखेंगे दूसरे □मिथियुस □ीसरे □ ध्याय के सोलहवें पद में हम पढ़□ हैं कि "हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया ह□। □ो इस वाक्यांश से एक बा□ स्पष्ट ह□

स्पष्ट ह□कि लगभग 40 लोगों ने इन 66 पुस्तकों को लिखा लेकिन ये पुस्तक उनकी □ पनी सोच नहीं ह□और ये पुस्तक उनकी □ पनी राय नहीं ह□यह उनकी □ पनी बुद्धि नहीं ह□ लेकिन ये 66 पुस्तकें परमेश्वर की प्रेरणा से रची गई हैं। प्रेरणा का म□लब ह□कि जिन लोगों ने लिखा उनको मन ही मन

परमेश्वर ने प्रोत्साहि□ किया कि वे इन बा□ों को लिखें। और परमेश्वर की प्रेरणा से ये जो बा□ें लिखी गई हैं उनके बारे में इसी पद में आगे हम देख□े हैं "और उपदेश, समझाने, सुधारने और धार्मिक□ा की शिक्षा के लिए लाभदायक ह□।

इन 40 लेखकों ने जब परमेश्वर ने उनके मन में प्रेरणा दी □ब इन पुस्तकों की रचना की और इन पुस्तकों की रचना सिर्फ □ पनी इच्छा के □ नुसार □ पने आनंद के □ नुसार या दूसरों को दिखाने के लिए नहीं बल्कि उपदेश, शिक्षा, प्रोत्साहन आदि के लिए परमेश्वर ने लिखवाया ह□ इस कारण पवित्र बाइबल □ न्य मनुष्य रचि□ पुस्तकों से बिल्कुल □ लग ह□ इसके बारे में दूसरे प□रस पहले □ ध्याय के इक्कीसवें पद में और □ धिक विस्तार दिया हुआ ह□ वहाँ हम पढ□े हैं: "कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई"।

याद रखें भविष्यवाणी का म□लब ह□ परमेश्वर का वचन। □ो इसका विस्तार से □ नुवाद किया जाए □ो □ नुवाद यह होगा:

- कोई भी परमेश्वर का वचन मनुष्य की इच्छा से नहीं लिखा गया, लेकिन भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा

> उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोल□ थे। 2 □मिथियुस 3:16

हमने इसके पहले देखा कि पवित्र बाइबिल की 66 कि□ाबें परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गई ह□यहाँ हम देख□ हैं कि यह प्रेरणा पवित्रात्मा के द्वारा आई। हम जान□ हैं कि इस कृपायुग में विश्वासियों को उनके आत्मिक जीवन के हर पहलू के बारे में पवित्रात्मा प्रेरणा दे□ हैं। □ो 35 ईसवी और 70 ईसवी के बीच में पवित्र आत्मा ने प्रभु यीशु के कई शिष्यों, कई प्रेरि□ों और कई भक्तजनों को पवित्र आत्मा की मदद से उभारा □ र्था□ जो काम करना ह□उस कार्य लिए उनको उभारा।

और जब इस □रह से पवित्र आत्मा ने उन लोगों को उभारा □ब उन लोगों ने जो लिखा यह उनकी वाणी नहीं थी। कलम उनका था, शब्द उनके थे, शा□ी उनकी थी लेकिन वाणी उनकी नहीं थी। वाणी परमेश्वर की थी। यहाँ हम पढ□ हैं "उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोल□ थे", □ पनी ओर से नहीं। मनुष्य की ओर से नहीं। □ो ये पद जब हम एक दूसरे से जोड़कर देख□ हैं, □ब उसके आधार पर हम इस बा□ को

स्पष्ट□या से समझ ले□ हैं कि परमेश्वर □पनी वाणी, □पना वचन, मनुष्य को देना चाह□ थे।

इस कारण परमेश्वर ने सबसे पहले मूसा को उभारा, पवित्र आत्मा ने मूसा को उभारा। और पवित्र आत्मा ने इस □रह से जो उभारा उसके कारण मूसा ने परमेश्वर की वाणी लिखि□ रूप मे हम को दी। मूसा परमेश्वर की ओर से बोल□ थे। परमेश्वर की वाणी को छ: पुस्तकों में मूसा ने लिखी: उत्पत्ति, निर्गमन, लेव्यव्यवस्था, व्यवस्थाविवरण और उसके साथ साथ □ य्यूब की पुस्तक।

बाइबल की सबसे आखिरी पुस्तक युहन्ना का प्रकाशि□वाक्य प्रभु यीशु के शिष्यों में यूहन्ना नामक जो शिष्य थे उन्होंने लिखी। इस □रह से 40 के करीब लोगों को पवित्र आत्मा ने उभारा। पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाने के कारण वे लोग परमेश्वर की ओर से बोल□ थे। जिसका म□लब यह ह□कि पवित्र बाइबल की जो 66 पुस्तकें हैं, ये 66 पुस्तकें परमेश्वर का वचन ह□ लिखा मनुष्य ने हैं। लिखा गया मनुष्य का इ□हास ह□मनुष्य की धार्मिक□ा के बारे में भी लिखा हुआ ह□□ धम पापियों के बारे में भी लिखा हुआ ह□ मनुष्य की

सोच उसके बारे में भी लिखा हुआ ह□परमेश्वर की सोच के बारे में भी लिखा हुआ ह□ लेकिन ये जो लिखा गया ह□सब कुछ परमेश्वर की प्रेरणा से और परमेश्वर की इच्छा से लिखा गया था।

इसका म□लब यह नहीं ह□कि जो कुछ लिखा गया वो परमेश्वर ने कहा नहीं। मनुष्यों के द्वारा कही हुई बा□ यहाँ पर लिखी गई ह□ श□ान के द्वारा कही गई बा□ लिखी हैं। जानवरों के द्वारा भी जो बा□ बोली गई थी, ऐसी भी कई बा□ लिखी हुई हैं। मनुष्यों में ही धर्मी लोगों के द्वारा और □ धर्मी लोगों के द्वारा लिखी गई बोली गई बा□ भी लिखी गई ह□

यह सब परमेश्वर की इच्छा से लिखा गया, जिससे कि धर्मी, □ धर्मी, मनुष्य, परमेश्वर, श□ान और मृग उन सब लोगों ने जो कुछ बोला वो सब कुछ बिल्कुल सही सही, बिना किसी गल□ी के ज□ा उन्होंने बोला व□ा का व□ा हमारे पास पहुंचे। यह सब हम को लिखि□ रूप में देकर प्रभु चाह□ हैं कि हम परमेश्वर के वचन के उपदेशों के आधार पर इन वाक्यों का, इन कथनों का, इस वा□लाप का, मूल्यांकन करें। मूल्यांकन करके सही और गल□, सच और झूठ में □ं□र कर सकें।

पवित्रात्मा की वाणी बाईबिल के बाहर??

कई बार लोग कह□ हैं कि हां यह बा□ □ो समझ में आ□ी ह□ कि परमेश्वर ने प्रेरणा दी और परमेश्वर की प्रेरणा से ये बा□ें लिखी गई हैं। लेकिन कई बार वे लोग यह दावा कर□ हैं कि पुराने नियम में पवित्रत्मा की वाणी गा□ मसीही लोगों ने भी सुनी थी, और इस गा□ मसीही लोगों की जो धर्म पुस्तकें हैं या धार्मिक पुस्तके हैं, उनमें भी पवित्रात्मा की वाणी मिल□ी ह□

भजन 147 के 19 और 20 में हम पढ़□ हैं:

- वह याकूब को □ पना वचन और इस्राइल को □ पनी विधियां और नियम ब□ा□ हैं।

यहाँ याकूब नाम इस्राइल का ही एक और पर्याय ह□

- "वह याकूब को □ पने वचन और इसराइल को □ पनी विधियां और नियम ब□ा□ हैं। किसी और जा□ से उन्होंने ऐसा व्यवहार नहीं किया। उनके नियमों को औरों ने नहीं जाना"।

ये दो पद बहु□ स्पष्ट ब□ा□े हैं कि पवित्रात्मा की प्रेरणा से जो कुछ लिखा गया ह□वह पुराने नियम के समय में सिर्फ यहूदियों को दिया गया था। नए नियम के समय हम स्वयं जान□े हैं कि परमेश्वर ने □पने प्रेरि□ों के द्वारा □पना वचन दिया था।

वैसे भी □न्य धर्मों के जो धार्मिक ग्रंथ ह□वे सब पुराने नियम के समय ही लिखे गए थे। □ो जब लोग यह दावा कर□े हैं कि बाइबल में जो वचन ह□वो □न्य धर्मग्रंथों में भी मिल□ा ह□□ो प्रभु का वचन कह□ा ह□कि ऐसा नहीं ह□ किसी और जा□ि को परमेश्वर ने पवित्रात्मा की प्रेरणा नहीं दी और पवित्रात्मा की प्रेरणा से उनके ग्रंथों में कुछ नहीं लिखा गया ह□ वे सब महान ग्रंथ हैं लेकिन उनका लेखन बाइबल के लेखन से भिन्न ह□

हाँ, आप कहेंगे कि यदि ऐसा ह□□ो हम □माम □रह की समान□ाएं देख□े हैं उनका क्या? हमें समझना चाहिये कि समान□ाएं दो प्रकार की हो सक□ी ह□ एक प्रभु यीशु के बारे में। यहां इस बा□ को समझ ले कि प्रभु यीशु के बारे में □न्य धर्मों में कुछ नहीं मिल□ा ह□ सिर्फ इस्लाम में मिल□ा ह□जो

मसीही धर्म के आरंभ होने के कई सौ साल के बाद आया था। जिन्होंने उसे लिखा था वे लोग नए नियम और पुराने नियम से परिचि□ थे। इस कारण उन्होने बाइबल से यह सब उठाया था. यह पवित्रात्मा की □ गुवाई नहीं थी| उसको हटा कर रखे □ो पुराने नियम के समय जि□ने धर्म ग्रंथ लिखे गए हैं उनमें किसी में भी प्रभु यीशु के बारे में या बाइबल के बारे में कुछ नहीं मिल□ा ह□ हाँ सदा सच बोलो, सबसे प्रेम करो, इस □रह की बा□ें सभी धर्मों में मिल□ी हैं। इनको शाश्व□ सत्य कहा जा□ा ह□

शाश्व□ सत्य परमेश्वर ने ही मनुष्य के मनों में दिया ह□ इस कारण सभी धर्मों में शाश्व□ सत्य देख□ हैं। लेकिन प्रभु यीशु के बारे में और प्रभु यीशु के द्वारा जो उद्धार ह□उसके बारे में जानकारी पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखी गई इन 66 पुस्तकों के □ लावा कहीं नहीं मिल□ी ह□ इन बा□ों को □ च्छी □रह से समझने के लिए मदद करें। इस विषय में और विस्तार से हम □ न्य पुस्तकों में आपको ब□ाएंगे।

दोस्तों, इस पुस्तक माला का नाम ह□बाइबल परिचय इसके पीछे एक कारण ह□ हम में से बहु□ सारे लोग बाइबल पढ़□

हैं लेकिन बाइबल से हमारा सही सही परिचय नहीं ह□ जब हम बाजार में निकल कर जा□े हैं □ो कई लोगों को देख□े हैं, रोज देख□े हैं। लेकिन उनको □ं□रंग री□ि से नहीं जान□े हैं। इसी □रह से बाइबल पढ□े हैं लेकिन □ं□रंग री□ि से नहीं जान□े □ो वो बाइबल परिचय नहीं ह□ आप बाइबल को नहीं जान□े। ज□ा जानना चाहिए व□ा नहीं जान□े।

हमारी कोशिश यह ह□ कि बाइबल परिचय पुस्तक माला को जब आप एक बार पूरी □रह से पढ़ लें □ो बाइबल आपके लिए एक चिर परिचि□ पुस्तक बन जाए और उसके बाद जब आप बाइबल की पुस्तकों को पढें □ब सारी बा□ें आपको और □धिक स्पष्ट□ा से समझ में आने लगे। उत्पत्ति और मत्ति के शुभ संदेश में क्या सम्बन्ध ह□ पुराने नियम और नए नियम में क्या संबंध ह□ यह सब आपको और □धिक स्पष्ट हो जाएगा।

इस कारण मेरा एक □नुरोध ह□ यदि बाइबल परिचय पुस्तकमाला की □न्य पुस्तकें आपने नहीं देखी हैं □ो इस पुस्तक के आखिर में जो लिंक दिए गए हैं वहाँ जाकर इन पुस्तकों को डाउनलोड कर लें। हमारी इच्छा बाइबल परिचय

माला में लगभग 70 इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकें लिखकर आपको देने की ह□ □ ब आपकी जिम्मेदारी ह□कि इन सब पुस्तकों को मुफ्त में डाउनलोड कर लें। डाउनलोड के लिए आधा मिनट भी नहीं लगेगा और एक पुस्तक को पढने में सा□ मिनट से ज्यादा नहीं लगेगा।

इस □रह से यदि आप थोड़ा सा समय निवेश कर□ हैं □ो ये पुस्तिकाये आपके पूरे आत्मिक जीवन को जमीन आसमान □क बदल सक□ हैं। इस कारण इस पुस्तक माला की सभी पुस्तकों को डाउनलोड कर लें और पढ लें।

हां एक □ नुरोध और ह□ इन पुस्तकों को जरूर दूसरों के साथ शेयर करें। आत्मिक जग□ में इस □रह से बहु□ सारे लोग हैं जिनको प्रभु के वचन के ठोस शिक्षा की जरूर□ ह□ लेकिन वे लोग नहीं जान□ कि यह कहाँ से प्राप्त करें।

जब आपको यह ज्ञान मिल गया ह□और आप जान□ हैं कि ये कहां से प्राप्त कर सक□ हैं और जब आपने उसे □ पने मोबाइल पर डाउनलोड कर लिया ह□□ो उसको कम से कम 5 या 10 परिवार के सदस्यों, मंडली के सदस्यों और मसीही

मित्रों के साथ शेयर करना न भूलें। प्रभु आपके ऊपर □ पना सर्व □ नुग्रह उंडेल दें।

हमारी सारी ईपुस्तकें आप निम्न वेबसाईट से मुफ्त डाऊनलोड कर सक□ हैं:

http://www.OnlyFreeBooks.com

Mob: 999 519 8690

हमारी बाइबिल परिचय पुस्तकमाला की शुरू की सारी पुस्तकों को मुफ्त में प्राप्त करने के लिये ऊपर दिये गये हमारे मोबाईल पर व्हाट्सेप द्वारा एक संदेश भेज दें □ो हम आप को उपलब्ध सारी की सारी पुस्तकें भेज देंगे.

लेखक-परिचय

शास्त्री जे सी फिलिप भौ□क-शास्त्र में प्रोफेसर थे. 1984 में

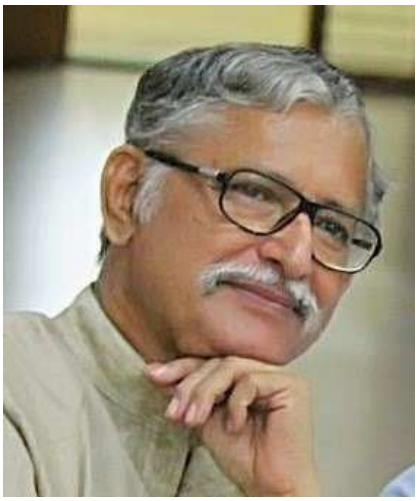

उन्होंने □पनी नौकरी छोड □पना जीवन प्रभु की सेवा में □र्पि□ कर दिया.

उनके स्वयं के कथन के □नुसार वे भार□ मां एवं हिन्दी भाषा के चरण सेवक हैं. प्रभु यीशु उनके प्रभु, मुक्तिदा□ा, एवं इष्टदेव हैं. उनका जीवन समाज में हर व्यक्ति की सेवा के लिए □र्पि□ ह□वे चाह□ हैं कि हर व्यक्ति प्रभु यीशु द्वारा मुक्ति पायें. वे यह भी चाह□ हैं कि हर व्यक्ति एक खुश एवं संपुष्ट जीवन बि□ायें.

शास्त्री जी की सारी पुस्तकें प्राप्त करने के लिये निम्न नम्बर पर संदेश भेजें (बुलाने की कोशिश न करें. वे बेहद व्यस्त व्यक्ति हैं):

999 519 8690